CBSE Class 10 - Hindi A

Sample Paper - 01

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   समय परिवर्तनशील है। जो आज हमारे साथ नहीं है कल हमारे साथ होगा और हम अपने दु:ख और असफलता से मुक्ति पा लेंगे यह विचार ही हमें सहजता प्रदान कर सकता है। हम दूसरे की सम्पन्नता, ऊँचा पद और भौतिक साधनों की उपलब्धता देखकर विचलित हो जाते हैं कि यह उसके पास तो है किन्तु हमारे पास नहीं है। यह हमारे विचारों की गरीबी का प्रमाण है और यही बात अन्दर विकट असहज भाव का संचालन करती है।

   जीवन में सहजता का भाव न होने के वजह से अधिकतर लोग हमेशा ही असफल होते हैं। सहज भाव लाने के लिए हमें एक तो नियमित रूप से योगासन-प्राणायाम और ध्यान करने के साथ ईश्वर का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इसमें हमारे तन-मन और विचारों के विकार बाहर निकलते हैं और तभी हम सहजता के भाव का अनुभव कर सकते हैं। याद रखने की बात है कि हमारे विकार ही अन्दर बैठकर हैं। ईर्ष्या -द्वेष और परनिंदा जैसे दुर्गुण हम अनजाने में ही अपना लेते हैं और अंततः जीवन में हर पल असहज होते हैं और उससे बचने के लिए आवश्यक है कि हम आध्यात्म के प्रति अपने मन और विचारों का रुझान रखें।

   i. अधिकतर लोग हमेशा ही असफल क्यों होते हैं?
   ii. असहजता से बचने का क्या उपाय है?
   iii. कौन से विचार हमें सहजता प्रदान कर सकते हैं?
   iv. विचारों की गरीबी से लेखक का क्या अभिप्राय है?
   v. हम सहजता का विकास कैसे कर सकते हैं?
   vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

Section B

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

   i. हुड़दंग तो इतना मचाया कि कॉलेज वालों को थर्ड इयर भी खोलना पड़ा। (वाक्य-भेद/आश्रित उपवाक्य का नाम लिखिए।)
   ii. मैं जल्दी से बाहर जाकर ओले देखने लगा। (मिश्र वाक्य में बदलिए।)
   iii. नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की के बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे। (संयुक्त वाक्य में बदलिए।)
   iv. जिस समय आचार्यों ने नाट्यशास्त्र-संबंधी नियम बनाए थे उस समय सर्वधारण की भाषा संस्कृत न थी। (वाक्य-भेद लिखिए।)

3. **निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तित कीजिए- (4)**

   i. बच्चों ने फिल्म की भूरि-भूरि प्रशंसा की। (कर्मवाच्य में)
   ii. बाढ़ग्रस्त जम्मू-कश्मीर के लिए अनेक लोगों द्वारा उदारता दिखाई गई। (कर्तृवाच्य में)
   iii. मैं अब चुप नहीं बैठ सकता। (भाववाच्य में)
   iv. उससे खड़ा भी नहीं हुआ जाता। (कर्तृवाच्य में)

4. **रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए- (4)**

   i. पक्षी आकाश में <u>उड रहे हैं</u>।
   ii. वह <u>निबंध</u> लिखता है।
   iii. <u>मोहन</u> दसवीं कक्षा में बैठा है।
   iv. हम अपने <u>देश पर</u> मर मिटेंगे।

5. **निम्न प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दें- (4)**

   i. रौद्र रस का स्थायी भाव लिखें।
   ii. 'घृणा' किस का स्थायी भाव है?
   iii. “अब प्रभु कृपा करौ एहि भांती, सब तजि भजन करहुँ दिन राती।'' में रस बताइये।
   iv. 'कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात, भरे भौंन में करत हैं नैननु हीं सब बात।' में कौन-सा रस है?

Section C

6. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़िए और नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी, जवानी-जिन्दगी सब कुछ होम कर देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढती है। दुःखी हो गए। पन्द्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे। कस्बे में घुसने से पहले ही ख्याल आया कि कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी, लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा।..... क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया।..... और कैप्टन मर गया। सोचा, आज

वहाँ रुकेंगे नहीं पान भी नहीं खाएँगे, मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं, सीधे निकल जाएँगे। ड्राइवर से कह दिया, चौराहे पर रुकना नहीं, आज बहुत काम है, पान आगे कहीं खा लेंगे।

लेकिन आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गईं। कुछ ऐसा देखा कि चीखे, रोको ! जीप स्पीड में थी, ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे। रास्ता चलते लोग देखने लगे। जीप रुकते-न-रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज़-तेज़ कदमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए।

मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

i. हालदार साहब की दृष्टि से कैसी कौम देश को अहित करने वाली होती है?
ii. हालदार साहब के मन में कस्बे में घुसने से पहले क्या ख्याल आया?
iii. हालदार साहब के दुःखी होने का क्या कारण था?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

i. बालगोबिन भगत की पुत्र-वधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

ii. नवाब साहब को कैसी भाव-परिवर्तन लेखक को अच्छा नहीं लगा और क्यों? 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर लिखिए।

iii. फ़ादर कामिल बुल्के के अभिन्न भारतीय मित्र का नाम पठित पाठ के आधार पर लिखिये तथा बताइये कि उनकी परस्पर अभिन्नता का कौन-सा तथ्य प्रस्तुत पाठ में परिलक्षित हुआ है?

iv. 'मन्नू भंडारी की माँ त्याग और धैर्य की पराकष्य थी-फिर भी लेखिका के लिए आदर्श न बन सकी।

v. मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ के जुड़ाव को अपने शब्दों में लिखे।

8. निम्न पदयांश को पढ़ कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखें- **(6)**

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा । को नहि जान बिदित संसारा।

माता पितहि उरिन भये नीकें । गुररिनु रहा सोचु बड़ जी कें।

सो जनु हमरेहि माथे काढ़ा। दिन चलि गये ब्याज बड़ बाढा ।

अब आनिअ ब्यवहरिआ बोली। तुरत देऊँ मैं थैली खोली।

i. उपर्युक्त पंक्तियों के वक्ता कौन हैं ?
ii. मुनि किसे कहा गया है और उनकी किन विशेषताओं से संसार परिचित है?
iii. इन पंक्तियों में कौन से व्यावहारिक ज्ञान के विषय में बातें हो रही हैं और क्यों ?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

    i. कवि ने 'उत्साह' कविता बादलों को क्यों सम्बोधित की है ?

    ii. 'यह दंतुरित मुसकान' पाठ के अनुसार पत्थर भी पिघलकर जल कब बन जाता है? इस उक्ति का अर्थ स्पष्ट करते हुए टिप्पणी कीजिए।

    iii. 'छाया मत छूना' कविता के आधार पर दुःख के कारण बताइए।

    iv. 'कन्यादान' कविता की माँ परम्परागत माँ से कैसे भिन्न है?

    v. कवि के अनुमान से संगतकार मुख्यगायक का छोटा भाई, शिष्य या दूर का रिश्तेदार क्यों होता है?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

    i. ''माता का आँचल'' पाठ में वर्णित मूसन तिवारी कौन थे? उनके साथ बाल-मंडली ने शरारत क्यों की थी और उसका क्या परिणाम हुआ? इस घटना से आपको क्या शिक्षा मिलती है ?

    ii. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाती है?

    iii. देश के प्राकृतिक स्थानों के सौन्दर्य का आनंद लेते समय अधिकांश सैलानी वहाँ के पर्यावरण को दूषित कर देते हैं। इस नैसर्गिक सौन्दर्य की सुरवाजें आप अपने दायित्व का निर्वाह कैसे करेंगे? 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए।

Section D

11. **सफलता की कुंजी : मन की एकाग्रता** विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। **(10)**

    - मन की एकाग्रता क्या और क्यों,
    - सफलता की कुंजी,
    - सतत अभ्यास।

OR

कार्यशीलता विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- अर्थ एवं महत्व
- जैसा कर्म, वैसा फल

- समाज की प्रगति का साधन।

OR

यदि मैं शिक्षा मंत्री होती/होता विषय पर दिए गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

- वर्तमान शिक्षा नीति,
- बदलाव की आवश्यकता,
- नई नीति

12. अपने प्रधानाचार्य को पत्र लिखकर अनुरोध कीजिए कि ग्रीष्मावकाश में विद्यालय में रंगमंच प्रशिक्षण के लिए एक कार्यशाला राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से आयोजित की जाए। इसकी उपयोगिता भी लिखिए। **(5)**

OR

अपने मित्र को पत्र लिखकर विद्यालय द्वारा चलाए जा रहे साक्षरता अभियान के अन्तर्गत आपके द्वारा किए जा रहे कार्यों का विवरण दीजिए।

13. मंडी हाउस नई दिल्ली मे उभरते चित्रकारों की चित्र प्रदर्शनी के लिए दर्शकों का ध्यान आकर्षित करते हुए 25-50 शब्दो मे एक विज्ञापन तैयार कीजिए | **(5)**

OR

आपको आवश्यकता है कुछ टीचर्स की जो हाईस्कूल कक्षाओं में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ा सकें। उचित विज्ञापन तैयार करे |

CBSE Class 10 - Hindi A
Sample Paper - 01

Answer
Section A

1. i. जीवन में सहजता का भाव न होने की वजह से अधिकतर लोग हमेशा ही असफल होते हैं अर्थात हमें अपनी स्थिति से संतुष्ट होना चाहिए।
   ii. हम आध्यात्म के प्रति अपने मन और विचारों का रुझान रख कर दूसरों के प्रति ईर्ष्या आदि से मुक्त हो सकते हैं और इस तरह असहजता से बच सकते हैं।
   iii. जो आज हमारे साथ नहीं है कल हमारे साथ होगा अर्थात यदि हमारे मन में धैर्य और संयम का वास होगा तो हम अपने दु:ख और असफलता से मुक्ति पा लेंगे यह विचार ही हमें सहजता प्रदान कर सकता है।
   iv. दूसरे की सम्पन्नता, ऊँचा पद और भौतिक साधनों की उपलब्धि अर्थात सम्पन्नता को देखकर अपना आत्मसंयम खो देना, उससे ईर्ष्या रखना तथा यह सोचना कि यह उसके पास तो है लेकिन हमारे पास नहीं हैं, ऐसे तुच्छ विचारों को मन में लाना ही विचारों की गरीबी है।
   v. सहजता के विकास के लिए हमें नियमित रुप से योगासन, प्राणायाम और ध्यान करना चाहिए साथ ही ईश्वर का स्मरण भी अवश्य करना चाहिए। इससे हमारे तन-मन और विचारों में संयम आएगा और विकार बाहर निकलेंगे जिससे हम सहजता का अनुभव कर सकते हैं।
   vi. सहजता का महत्व
2. i. कि कालेज वालों को थर्ड इयर भी खोलना पड़ा। (मिश्र वाक्य - संज्ञा उपवाक्य)
   ii. जब मैं जल्दी से बाहर गया तभी ओले देखने लगा।
   iii. नवाब साहब ने कुछ देर गाड़ी की खिड़की के बाहर देखा और स्थिति पर गौर करते रहे।
   iv. मिश्र वाक्य।
3. i. बच्चों द्वारा फिल्म की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।
   ii. बाढ़ग्रस्त जम्मू-कश्मीर के लिए अनेक लोगों ने उदारता दिखाई।
   iii. मुझसे अब चुप बैठा नहीं जाता।
   iv. वह खड़ा भी नहीं हो सकता।
4. i. **उड़ रहे हैं-** क्रिया, अकर्मक, पुल्लिंग, बहुवचन, वर्तमान काल।
      अकर्मक क्रिया, बहुवचन, पुल्लिंग, वर्तमान काल।
   ii. **निबन्ध-** संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।
   iii. **मोहन-** संज्ञा, व्यक्तिवाचक पुल्लिंग एकवचन।
      व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।
   iv. **देश पर-** संज्ञा, जातिवाचक पुल्लिंग एकवचन, अधिकरण कारक।
5. i. रौद्र रस का स्थायी भाव 'क्रोध' है।

ii. 'घृणा' वीभत्स रस का स्थायी है।

iii. पंक्ति में 'शांत रस' है।

iv. पंक्ति में 'श्रृंगार रस' है।

6. i. हालदार साहब के मत से देशभक्तों का मखौल उड़ाने वाली कौम स्वार्थी होती हैं। ऐसी कौम कभी भी अपने देश का हित नहीं कर सकती, वह सिर्फ अपनी भलाई के विषय में सोचती है ।

ii. हालदार साहब के मन में कस्बे में घुसने से पहले ये ख़याल आया कि नेताजी की मूर्ति तो वहीं होगी किन्तु कैप्टन की मृत्यु हो जाने के कारण उस पर चश्मा नहीं होगा ,क्योंकि मास्टर उसे लगाना भूल गया था। उन्होंने निश्चय किया कि चौराहे से गुजरते हुए उस ओर नहीं देखेंगे।

iii. हालदार साहब उन देशवासियों के व्यवहार को सोचकर दुःखी हो रहे थे जिनके हृदय देशभक्ति की भावना से शून्य थे। जो देश पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने वाले देशभक्तों का सम्मान करने के बजाय उनकी हँसी उड़ाते थे। ऐसे देश का भविष्य कैसा होगा यह सोचकर वे दुःखी थे।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. बालगोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले इसलिए नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि पुत्र की मृत्यु के बाद अब भगत अकेले रह गए थे | उन्होंने कभी किसी के आगे सहायता के लिए हाथ नही फैलाया । वृद्धावस्था में उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था | पतोहू को चिंता थी कि कौन उनकी देखभाल करेगा | कौन उन्हें खाना बनाकर खिलायेगा और कौन बीमारी में उन्हें दवा देगा |

ii. लेखक को डिब्बे में आया देखकर नवाब साहब ने उनके प्रति बेरुखी और संकोच दिखाया, पर थोड़ी देर बाद ही उन्हें अभिवादन कर उन्हें खीरा खाने के लिए आमंत्रित कर लिया | लेखक को उनका यही भाव परिवर्तन अच्छा नहीं लगा क्योंकि मिलने पर पहले बेरुखी और फिर अभिवादन का कोई औचित्य नहीं | लेखक ने यह सोचा कि नवाब साहब अपनी शराफत का भ्रमजाल बनाए रखने के लिए उन्हें मामूली व्यक्ति समझकर अपनी हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं |

iii. फादर कामिल बुल्के के अभिन्न भारतीय मित्र का नाम डॉ रघुवंश था | वे हिंदी के उद्भट विद्वान थे | फादर की उनसे बहुत घनिष्ठता थी | अपनी माताजी के लिखे हुए पत्र फादर रघुवंश जी को दिखाते थे और अपने घर की सभी बातें उन्हें बताते थे |

iv. लेखिका स्वतंत्र विचारों वाली, अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग थी | उनकी की माँ त्याग और धैर्य की पराकाष्ठा थी पर वे लेखिका के लिए आदर्श नहीं बन सकी क्योंकि उनकी दृष्टि में उनका ये धैर्य और त्याग स्वाभाविक न होकर विवशता और बेबसी से उपजा था |

v. बिस्मिल खां अपने मज़हब की परम्पराओं के प्रति शालीन और सजग थे | मुहर्रम और शहनाई में आपस में गहरा संबंध रहा है | मुहर्रम के समय खाँ साहब हजरत इमाम हुसैन एवं उनके वंशजों के प्रति पूरे दस दिनों तक शोक मनाते थे। इन दिनों में खां साहब और उनके परिवार का कोई भी सदस्य न तो शहनाई बजता था और न

ही किसी संगीत कार्यक्रम में शिरकत ही करता था | इन दिनों संगीत की मनाही थी |मुहर्रम की आठवीं तारीख को बिस्मिल्ला ख़ाँ खड़े होकर दाल मंडी में फातमान के लगभग आठ किलोमीटर की दूरी तक रोते हुए नौहा बजाते पैदल ही जाते थे। उनकी आँखें इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में भीगी रहती थीं । उस समय एक महान संगीतकार का सहज मानवीय रूप देखकर, उनके प्रति अपार श्रद्धा उत्पन्न हो जाती थी।

8. i. उपर्युक्त पंक्तियों के वक्ता लक्ष्मण जी है।

ii. मुनि परशुराम जी को कहा गया है। उनकी निम्नलिखित विशेषताओं से लोग परिचित हैं :-

क) वे अत्यंत क्रोधी स्वाभाव के हैं |

ख) उन्होंने सहसबाहु का वध करके पृथ्वी क्षत्रियों से रहित कर ब्राह्मणों को दान कर दी थी |

ग) वे भगवान् शिव के भक्त हैं |

घ) वे बाल ब्रम्हचारी हैं ।

iii. इन पंक्तियों में उन व्यवहारिक ज्ञान की बात हो रही है जिसमे यदि कोई व्यक्ति किसी से ऋण लेता है तो ब्याज बढ़ जाने के दर से जल्द से जल्द चुकाना चाहता है ,इसीलिए लक्ष्मण जी परशुरामजी से कहते हैं कि माता-पिता के ऋण से तो आप उऋण हो चुके हो किन्तु गुरु का ऋण अभी चुकाना शेष है जिसे सोंचकर आप परेशान हो रहें हैं कि दिन बीत जाने से उसका ब्याज भी बढ़ जाएगा| इस कारण वह ऋण मेरे माथे मढ दिया है तो व्यवहारिक नियम के अनुसार आप मुझे बताइए main अभी थैली खोल कर उसे चुका देता हूँ।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. कवि ने उत्साह कविता बादलों को इसलिए संबोधित की है क्योंकि 'बादल' निराला का प्रिय विषय है | जहाँ कविता में बादल एक ओर प्यास से पीड़ित लोगों की प्यास बुझाने वाला है वहीँ दूसरी ओर उसे नवीन कल्पना और नवांकुर के लिए विप्लव और क्रांति चेतना को संभव करने वाला भी माना है |

ii. पाषाण का पिघलकर जल बन जाने का तात्पर्य है कि बच्चे के मृदु स्पर्श में इतनी कोमलता है कि उसे छूकर कठोर पत्थर भी पिघलकर पानी बन सकता है। यह कहना भी उचित होगा कि बच्चे की मनोहर छवि को देखकर कठोर से कठोर हृदय भी पिघल जाता है।

iii. कवि ने दु:ख के कारण बताए हैं-पुरानी यादें और बड़े सपने। इन्हें जीने से दु:ख बढ़ते हैं। यश, वैभव, मान, सम्पत्ति सब बड़े सपने हैं जो छाया की तरह अवास्तविक एवं काल्पनिक हैं। व्यक्ति को अतीत की यादों और भविष्य के इन सपनों से अलग रहकर जीना चाहिए तभी दु:ख से बच सकता है। कविता में दुख के अनेक कारण बताए हैं-1-पुरानी स्मृतियों को याद करने से वर्तमान का दुख और गहरा हो जाएगा। 2-संपत्ति एवं यश की लालसा में दुख ही प्राप्त होता है। 3-प्रभुत्व प्राप्त करने की आकांक्षा मृगतृष्णा के समान दुखदाई है। 4-दुविधा मनुष्य के साहस को असमंजस में डाल देती है।

iv. परंपरागत माँ अपनी बेटी को सब कुछ सहकर दूसरों की सेवा करने की सीख देती है। लेकिन 'कन्यादान' कविता में माँ सीख देती है कि लड़की के गुणों को बनाए रखना, ससूराल में कभी कमजोर मत बनना। वह दहेज के लिए

जलाए जाने के खतरे के बारे में माँ ने लड़की को आगाह किया है। और कहा कि गहने, वस्त्राभूषणों के बन्धन से दूर रहना है। वह शोषण का पात्र न बने जबकि शोषण का विरोध करें। और सामाजिक मर्यादा का पालन करें। ये सभी शिक्षा है, वह अपनी लड़की को देती है इसलिए 'कन्यादान' कविता की माँ आधुनिक माँ से बिल्कुल भिन्न है।

v. कवि को गायक और संगतकार के संबंधों का ठीक ज्ञान तो नहीं है। लेकिन वह उनके संबंधों को देखकर एक अनुमान लगाता है। उसके अनुमान से संगतकार गायक का कोई बहुत नजदीकी प्रियजन है। उसका प्रिय शिष्य, छोटा भाई या दूर का रिश्तेदार हो सकता है। जो उसके कठिन समय में उसका साथ देने को तैयार हैं। वह मुख्य गायक की हर आज्ञा का पालन करता हैं।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

i. 'माता का आँचल' पाठ में मूसन तिवारी गांव के वृद्ध व्यक्ति थे और उन्हें आँखों से कम दिखाई देता था। एक बार जब भोलानाथ और उनके साथी बाग से लौट रहे थे तब उनके ढीठ दोस्त बैजू के बहकावे में सब बच्चों ने मिलकर मूसन तिवारी को चिढ़ाया था। मूसन तिवारी के खदेड़ने पर सब बच्चे भाग गए। तिवारी जी सीधे पाठशाला गए और वहाँ से बैजू और भोलानाथ को पकड़कर बुलवाया। बैजू तो भाग गया लेकिन भोलानाथ की गुरु जी ने खूब खबर ली। इस घटना से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें वयोवृद्ध लोगों का आदर-सम्मान करना चाहिए।

ii. सरकारी तंत्र में जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है, वह उनकी गुलामी एवं चाटुकारिता पूर्ण मानसिकता को दर्शाती हैं। सरकार का हर कार्य केवल खानापूर्ति के लिए था न कि कर्तव्य बोध के लिए। स्वतंत्र होने के बावजूद भी भारतीय सरकार विदेशी उच्चाधिकारियों को नाराज़ नहीं करना चाहती थी। सरकारी तंत्र उस अंग्रेज अधिकारी जार्ज पंचम की नाक लगाने के लिए चिंतित है, जिसने हम पर विभिन्न अत्याचार किए थे।

iii. सैलानी जब प्राकृतिक स्थानों के सौन्दर्य का आनंद लेते हैं तब वहाँ अपने साथ खाने का सामान, पानी की बोतल अन्य पैकेट्स साथ लेकर जाते हैं और खाली करने के बाद इधर - उधर फेंक देते हैं। हम अनजाने में ही पर्यावरण को प्रदूषित कर देते हैं। वहाँ तमाम खाली डिब्बे, कूड़ा-कचरा, प्लास्टिक बैग फेंककर वातावरण को प्रदषित कर देते हैं। हमें वहाँ जाकर ऐसा नहीं करना चाहिए और साथियों को भी ऐसा करने से रोकना चाहिए। इन सभी कचरे को एक जगह डस्टबिन में एकत्रित कर देना चाहिए जन जागरूकता फैलाकर हम इन स्थानों को प्रदूषण से बचा सकते हैं। यही नहीं अपितु स्थानीय पक्षियों, जानवरों पर प्रहार करना भी ठीक नहीं है। वहाँ की वनस्पतियों की सुरक्षा करना प्रत्येक सैलानी का दायित्व है उन्हें नष्ट नहीं करना चाहिए।

11. समनुष्य ईश्वर द्वारा सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसकी सफलता-असफलता स्वयं उस के ही हाथों में है। शायद तभी प्रभु ने उसे बल-बुद्धि, विवेक जैसे सद्गुण प्रदान किए हैं ताकि उनका सदुपयोग करके वह इस मनुष्य जीवन को सार्थक बनाए किन्तु छल ,कपट और आपसी प्रतिद्वंदिता के कारण सभी एक-दूसरे के दुश्मन बन कर सफलता प्राप्ति के मार्ग से भटक गए हैं ऐसे

समय में सबसे बड़ी आवश्यकता मन को एकाग्र करने की है। वेद- पुराणों और शास्त्रों में भी मन की एकाग्रता पर बल दिया है।

सफलता की कुंजी: मन की एकाग्रता बताई गई है। संस्कृत की इस प्रसिद्ध उक्ति का तात्पर्य है कि “परिश्रम से ही कार्य होते हैं, इच्छा करने से नहीं जैसे सोते हुए सिंह के मुँह में पशु स्वयं नहीं प्रवेश करते।" इससे स्पष्ट है कि कार्य सिद्धि के लिए परिश्रम बहुत आवश्यक है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सफलता प्राप्त करने के लिए एकाग्रता के अलावा कठिन परिश्रम, शांत चित्त के साथ समय नियोजन भी आवश्यक होता है। कहा जाता है कि समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता इसलिए उचित समय पर ही एकाग्रभाव और शांत मन से लक्ष्य सिद्धि का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि अनुचित समय पर प्राप्त सफलता का कोई महत्त्व नहीं होता।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक मनुष्य ने जो भी विकास किया है, वह सब परिश्रम की ही देन है। बड़े-बड़े बाँधों का निर्माण देखिए, कई मंजिलों वाले भवन देखिए, खदानों की खुदाई, पहाड़ों की कटाई, समुद्र की गोताखोरी या आकाश-मण्डल की यात्रा का अध्ययन कीजिए। सब जगह मानव के परिश्रम की गाथा सुनाई पड़ेगी। केवल शारीरिक परिश्रम ही परिश्रम नहीं है बल्कि मानसिक परिश्रम करने वाले कार्यालय में बैठे हुए प्राचार्य, लिपिक या मैनेजर केवल लेखनी चला कर या परामर्श देकर भी जी-तोड़ मेहनत करते हैं। महात्मा गाँधी दिन-भर सलाह-मशविरे में लगे रहते थे इसलिए कि वे घोर परिश्रमी थे। पुरुषार्थ का सबसे बड़ा लाभ यह है कि सफलता मिलती हैं। परिश्रम ही सफलता की ओर जाने वाली सड़क है। परिश्रम से आत्मविश्वास प्राप्त होता हैं। मेहनती आदमी को व्यर्थ में किसी की जी-हजूरी नहीं करनी पड़ती, बल्कि लोग उसकी जी-हजूरी करते हैं। मेहनती आदमी का स्वास्थ्य सदा ठीक रहता हैं। मेहनत करने से गहरा आनन्द मिलता है। उससे मन में यह शान्ति होती है कि मैं निठल्ला नहीं बैठा। रॉबर्ट कोलियार कहते हैं-'मनुष्य का सर्वोत्तम मित्र उसकी दसे अँगलियाँ हैं।' अतः हमें जीवन का एक-एक क्षण परिश्रम करने में बिताना चाहिए। श्रम मानव-जीवन का सच्चा सौन्दर्य हैं। निरंतर एकाग्रचित्त होकर परिश्रम करने वाला व्यक्ति एकलव्य, ध्रुव, कर्ण आदि की भांति ही अपने कार्य में सफल होते हैं इसलिए साहस ईमानदारी के साथ प्रयास करना चाहिए और यदि असफलता मिलें तो भी सकारात्मक भाव से फिर से प्रयत्न करना चाहिए सफलता निश्चय ही कदम चूमेगी।

OR

कार्यशीलता का तात्पर्य है कर्म करते हुए जीवन यापन करना। आलसी व्यक्ति जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाता जबकि कर्मशील व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर सब कुछ अर्जित कर लेता है।परिश्रमी व्यक्ति के लिए कुछ भी दुर्लभ एवं असाध्य नहीं है ।

" उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः' अर्थात् कार्य उद्यम (कर्मशीलता, परिश्रम) से ही सिद्ध होते हैं, केवल इच्छा करने से नहीं। कर्मठ व्यक्ति को आजीविका मिल ही जाती है। वह खाली नहीं बैठ सकता। परिश्रम करके जो रोजी-रोटी खाता है, उसका आनन्द कुछ अलग है अन्यथा दूसरों पर अवलम्बित रहने वाले व्यक्ति में न तो आत्मसम्मान रहता है और न संघर्ष का साहस ही रह पाता है। परिश्रमी व्यक्ति समुद्र में से मोती खोज सकता है तो वहीं आकाश में भी अपनी राह निकाल लेता है और पहाड़ों को खोद कर रास्ता बना लेता है। हमारे आध्यात्मिक ग्रंथ भी इस बात पर बल देते हैं कि अच्छे कर्म का अच्छा फल मिलता है और दुष्कर्म का बुरा फल मिलता है। कबीर कहते हैं-

जो तोकूँ काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल।

तोको फूल के फूल हैं बाकों हैं तिर सूल।।
गीता में 'कर्म' के महत्व को भगवान श्रीकृष्ण के इन शब्दों में व्यक्त किया है-
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
अर्थात् हे अर्जुन! तुझे कर्म करने का अधिकार है, फल की चिन्ता करने का नहीं। अच्छे कर्मों का फल अच्छा मिलता है और बुरे कर्मों का बुरा फल-यह अवधारणा व्यक्ति को अनैतिक, अमानवीय कार्यों से दूर रखती है। निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म कभी बेकार नहीं जाता।
कर्मशीलता ही देश समाज और व्यक्ति की प्रगति का साधन है। आलस्य हमारा सबसे बड़ा शत्रु है अत: आलस्य को त्यागकर कर्मशील, परिश्रमी बने तभी जीवन में सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। परिश्रम के साथ ईमानदारी से किया गया कर्म कभी भी निरर्थक नहीं जाता ।

OR

शिक्षा उस वृक्ष के समान है जिसकी शाखाएँ बहुविकसित और बहुफलित है किन्तु आज भी इसको पुनः विश्लेषित करने की आवश्यकता है ऐसे तो हमारे देश को आजाद हुए सत्तर वर्ष हो गए हैं फिर भी हमारे देश में शिक्षा का प्रचार-प्रसार तेजी से नहीं हो पाया है इसलिए सरकार इस दिशा में काफी तेज कदम बढ़ा रही है किन्तु इसके परिणाम अभी तक अपेक्षित रूप में सामने नहीं आए हैं। दुर्भाग्य का विषय यह है कि कई शिक्षा योजनाओं के लागू होने के बावजूद भी अब भी हमारे देश की दशा निरक्षरता के काफी करीब और साक्षरता से कोसों दूर है। हमें यह भलीभाँति जानना -समझना चाहिए कि शिक्षा ही किसी देश की प्रगति का एकमात्र आधार है। इसलिए जिस देश के नागरिक यदि शिक्षित नहीं है, वह देश विश्व के अन्य देशों की तुलना में प्रगति के पथ से या तो भटका हुआ या पिछड़ा हुआ दिखाई देता हैं। इसका प्रतीक हमारा देश है। दुर्भाग्य से हमारे देश में वर्तमान शिक्षा-पद्धति का आरंभ अंग्रेजी सत्ता की स्वार्थमयी कुत्सित प्रवृत्तियों को आधार बनाकर किया गया था। आज तक यही दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली हमारे देश में प्रचलित हैं। जो पूरी तरह अव्यावहारिक और बोझिल है। फलस्वरूप यह शिक्षा-पद्धति हमारी संस्कृति और राष्ट्रीय-चेतना से कोसों दूर है।
अन्य लोगों की तरह सामाजिक सेवा करने की भावना से मैंने भी कुछ करने का निश्चय किया है | यदि मैं सौभाग्यवश अपने देश का शिक्षा मंत्री बन जाता हूँ तो मैं शिक्षा पद्धति और शिक्षा प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करने के लिए स्वयं को तैयार करूँगा क्योंकि मुझे यह भलीभाँत मालूम है कि हमारे देश की शिक्षा-पद्धति और इसकी प्रणाली में कौन-कौन से दोष हैं। जैसे अभी भी पठन-पाठन के पुराने घिसेपिटे तरीके लागू हैं। शिक्षा का निजीकरण हो चुका है, शिक्षा का व्यवसायीकरण हो चुका है। यही नहीं मुझे यह भी अच्छी तरह से ज्ञात है कि उसके स्थान पर कौन-सी शिक्षा-पद्धति-प्रणाली लागू करके शिक्षा के स्तर को हमारे देश में अपेक्षित रूप से उठाया जा सकता है। मुझे यह भी पूरी तरह जानकारी है कि आज का विद्यार्थी-शिक्षार्थी ही कल का नागरिक हैं।
मैं यह ठीक से जानता हूँ कि आज की शिक्षा व्यावहारिक नहीं है, इसे व्यावहारिक बनाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए गए हैं। इसलिए इसका परिणाम कल्याणप्रद नहीं है। इसलिए इसे व्यावहारिक बनाने के लिए मैं प्रचलित शिक्षा प्रणाली को व्यावहारिक शिक्षा प्रणाली से जोड़कर अपेक्षित योजना लागू करवाऊँगा। मुझे यह दिखाई देता है कि बदलते माहौल और परिवेश के अनुसार आज के छात्र-छात्राओं में पढ़ाई के प्रति कोई अभिरुचि नहीं हैं। अतएव वे पढ़ाई में मन-ध्यान नहीं लगाते हैं। वे तो इसे बोझ ही समझते हैं। इसलिए मैं इनकी पढ़ाई के प्रति होने वाली अरुचि के कारण का पूरा-पूरा पता

लगाकर उसे दूर करने का प्रयास करूंगा। छात्र-छात्राओं के अभिभावकों का भी शिक्षा के प्रति कोई लगाव और चेतना नहीं दिखाई देती है। वे अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को अपने बच्चों पर लादने में तनिक भी संकोच नहीं करते हैं। यही नहीं वे अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को उन पर लाद करके अपने उत्तरदायित्व से छुट्टी ले लेते हैं किन्तु बच्चों पर अनचाहा तनाव डाल देते हैं उधर बच्चे भी शिक्षा को बोझ समझकर उससे उदासीन हो जाते हैं। फलतः ऐसे बच्चों का शैक्षिक, बौद्धिक, शारीरिक आदि कोई भी विकास नहीं हो पाता है। इस प्रकार की बुनियादी शिक्षा में आने वाले दोषों का मैं अध्ययन-मनन करके उन्हें दूर करने का पूरा ध्यान देकर प्रयत्न करूंगा।

आवश्यकता है कि शिक्षा को सरल,सरस और रोचक बनाना चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि वह सर्वजन सुलभ हो, छात्र-छात्राओं की क्षमता को उनके अंकों के आधार पर नहीं आंकना चाहिए बल्कि उनकी योग्यता को महत्त्व देना चाहिए | उनका रिपोर्ट कार्ड व्यवहारिकता पर आधारित होना चाहिए। एक शिक्षामंत्री के तौर पर मेरा कर्तव्य होगा कि विद्यार्थी का शारीरिक, बौद्धिक विकास के साथ मानसिक विकास भी हो ताकि वे सम परिस्थिति के साथ विषम परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम हों।

12. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

डी.ए.वी. स्कूल (विद्यालय)

द्वारका-6, दिल्ली

विषय- रंगमंच प्रशिक्षण हेतु कार्यशाला का आयोजन

श्रीमान् जी,

सविनय निवेदन है कि मैं इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से रंगमंच प्रशिक्षण के लिए दस दिवसीय एक कार्यशाला का आयोजन विद्यालय परिसर में करने की अनुमति चाहता हूँ। रंगमंच एक ऐसा माध्यम है जो न केवल हम छात्रों के विचारों को एक दिशा प्रदान करेगा बल्कि उन्हे भविष्य के लिए भी निर्देशित करेगा । इससे होने वाले लाभों से मैं आपको परिचित कराना चाहता हूँ।

रंगमंच का प्रशिक्षण लेने से छात्रों के व्यक्तित्व का विकास होने के साथ ही उसकी दबी छिपी प्रतिभा को निखरने का अवसर प्राप्त होगा तथा छात्र अभिनय व कला द्वारा अन्तर्निहत शक्तियों को अभिव्यक्त करने में भी समर्थ होंगे। इसके साथ-साथ कुछ उच्छृंखल छात्रों को भी एक दिशा मिल जाएगी और इससे वे अपना समय इधर-उधर व्यतीत न कर एक उद्देश्यपूर्ण कार्य में लगायेगें व समय का सदुपयोग करेंगे।

अतः आपसे प्रार्थना है कि आप शीघ्रातिशीघ्र इस कार्यशाला का आयोजन करने की अनुमति प्रदान करें ताकि हम इस योजना को क्रियान्वित कर सकें।

सधन्यवाद !

प्रार्थी

गौरव

अनु. 32 दशमें क

डी.ए.वी. विद्यालय

द्वारका-6, दिल्ली

17 जनवरी, 2019

OR

परीक्षा भवन

दिल्ली-6

दिनांक: 17 जनवरी, 2019

प्रिय मित्र गौरव,

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। पढ़कर बहुत खुशी हुई कि तुम मेरे प्रत्येक विचारो एवं कार्यों से सहमत हो और समय-समय पर मुझे दिशा निर्देशित भी करते रहते हो शायद इसीलिए मैं स्वयं को तुम्हारे निकट अनुभव करता हूँ।

मित्रवर ! तुम्हें यह सुनकर बड़ी खुशी होगी कि हमारे विद्यालय के कुछ विद्यार्थियों के दल को साक्षरता अभियान के लिये चुन लिया गया है, उसमें मैं भी शामिल हूँ। इस अभियान दल के सभी सदस्यों ने निरक्षरों को साक्षर बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। यहीं नहीं हमने कुछ निरक्षरों को पढ़ाना भी शुरू कर दिया है। इस अभियान में हम लोगों ने अपने आस-पास के लगभग 100 अनपढ़ों को पढ़ाने की सूची बना ली है। मैं इस अभियान-दल का निरीक्षक हूँ। जिससे मेरी ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ गयी है और इसलिए मुझे अत्यधिक मेहनत करनी पड़ती है। हमने कापी किताबों से लेकर उनमें पढ़ाई के प्रति रुचि जाग्रत करने के सभी प्रबंध कर लिए हैं ,ऐसे में उनकी भी जागरूकता देखते ही बनती है। हमारे इस अभियान में और भी लोगों ने जुड़ना शुरू कर दिया है। खुशी की बात है कि समाचार-पत्र भी इसको महत्व दे।

आशा है कि तुम इससे प्रेरणा लोगे। इस विषय में अपना विचार पुत्र द्वारा प्रस्तुत करोगे।

इस विश्वास के साथ।

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

धीरेन्द्र

13.

चित्र प्रदर्शनी

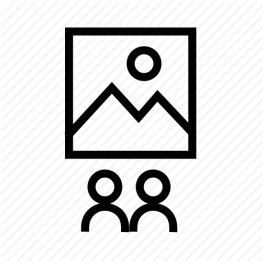

उभरते चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है।

इच्छुक व्यक्ति प्रदर्शनी में अपने पसंदीदा चित्र आकर्षक कीमत पर खरीद भी सकते हैं।

नोट :- आपकी उपस्थिति कलाकारों की हौसला अफजाई करेगी।

स्थान- मंडी हाउस, नई दिल्ली में

दिनांक - 17 जनवरी से 19 जनवरी, 2019 तक

समय - प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक

OR

<u>आवश्यकता है अध्यापकों की</u>

ऐसे टीचर्स की सभी विषयों में जो हाईस्कूल तक अंग्रेजी माध्यम से पढ़ा सकें। योग्यता सम्बन्धित विषय में एम.ए., बी.एड. या एम.एस.सी., बी.एड.।

- वेतन योग्यतानुसार
- अनुभवी को प्राथमिकता
- अधिकतम उम्र ५० वर्ष
- कंप्यूटर का कार्यसाधक ज्ञान अनिवार्य

मिलें प्रतिदिन 10-12 बजे तक
प्रधानाचार्य केनेडी पब्लिक स्कूल, पटना, बिहार।
संपर्क : ९००१२५####